हमारा परमेश्वर सदाचारी है

परमेश्वर के बारे में अब तक के अपने अध्ययन में हमने देखा है कि वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सृजनात्मक और ऐतिहासिक है। हमने देखा कि उसके प्रत्येक गुण से हमारा जीवन प्रभावित होता है। वास्तव में, यदि वह परमेश्वर जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं, न होता तो हमारा अस्तित्व भी न होता। ''हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; ...'' (प्रेरितों 17:28)। हमारा परमेश्वर निकट, सामर्थी और समझ है। उसने हमारे लिए सब कुछ उपलब्ध कराया है और हमारी अगुआई करता है। इस सबके लिए और दूसरी सभी बातों के लिए हम सचमुच उसका धन्यवाद करते हैं।

परमेश्वर के एक गुण के बारे में जो हमारी भलाई के लिए निर्णायक है, हमने अभी तक विचार नहीं किया है। यदि परमेश्वर सदाचारी न होता तो जितने भी गुणों की हमने अब तक समीक्षा की है, वे सभी हमें अजीब और दुखद स्थिति में डाल देते। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि इस जीवन में यहां और अनन्तकाल में हमारी भलाई, परमेश्वर के सदाचारी होने के कारण ही है। इसलिए आइए उसके इस सर्वश्रेष्ठ गुण का ध्यान से अध्ययन करें।

सत्य की पुष्टि हुई

सदाचारी होने के लिए पूर्णतया पवित्र होना आवश्यक है। पूर्ण तथा पवित्रता की स्थिति सदाचारी और आत्मिक रूप से सिद्ध होने से ही मिलती है। निस्संदेह केवल परमेश्वर के लिए ही ऐसा कहा जा सकता है। बाइबल पृथ्वी पर तथा स्वर्ग में परमेश्वर की पवित्रता की पुष्टि कई बार करती है। नीचे दिए गए उदाहरणों पर विचार करें।

अपने पुत्र के जन्म का पूर्व अनुमान लगाते मरियम के मुंह से निकला था: ''... उस शक्तिमान ने मेरे लिए बड़े-बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पवित्र है'' (लूका 1:49)।

प्रेरित यूहन्ना को स्वर्ग के दृश्य दिखाए जाने पर, उसने परमेश्वर के सिंहासन को मनुष्यों तथा स्वर्गदूतों से घिरा हुआ पाया था। वे ''जीवित प्राणी'' बिना रुके गाये जा रहे थे, ''पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु, परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है'' (प्रकाशितवाक्य 4:8ख)। वे ''जीवित प्राणी'' सिंहासन पर बैठने वाले की महिमा तथा स्तुति गा रहे थे। उनके साथ वे चौबीस प्राचीन भी थे जो यह गाते हुए ''कि हे हमारे प्रभु,

और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं'' (प्रकाशितवाक्य 4:9-11)। अनादि परमेश्वर की आराधना कर रहे थे। उनके ''स्वर्गीय परिप्रेक्ष्य'' से हम देखते हैं कि परमेश्वर संसार की सृष्टि से भी पहले पवित्र था। जिस प्रकार उसका स्वभाव सर्व-ज्ञानी और सर्वशक्तिमान होना है वैसे ही पवित्र होना भी उसका स्वभाव है।

पुन:, ''स्वर्गीय परिप्रेक्ष्य'' उस समय सामने आया जब यशायाह नबी ने परमेश्वर को ऊंचे और महिमामय सिंहासन पर बैठे और सारापों को उसकी सेवा करते और यह पुकारते हुए देखा व सुना, ''सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है'' (यशायाह 6:1-3)।

पृथ्वी पर तथा स्वर्ग में परमेश्वर की पवित्रता पर ज़ोर देते ये दृश्य स्पष्ट रूप से उसकी सृष्टि से जुड़े हुए हैं: ''सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है।'' वह महिमा तथा स्तुति के योग्य है क्योंकि उसने सृष्टि की प्रत्येक वस्तु को रचा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि उसकी सृष्टि पवित्रता के प्रकाशमण्डल से सुसज्जित है। ऊर्जा, सुन्दरता तथा तरतीब को देखकर सृष्टि में हमें एक नैतिक गुण मिलता है।

सत्य रखा गया

सृष्टि तथा इतिहास में अपने लिए परमेश्वर के संदर्भ पर चर्चा करने के बाद, अब हम अपने लिए परमेश्वर के सदाचारी संदर्भ से अवगत होना चाहते हैं। परमेश्वर हमारे जीवनों का जन्मदाता (सृष्टि में) और बनाए रखने वाला (इतिहास में) है। क्योंकि वह अति पवित्र है, इसलिए यह आशा की जाती है कि मनुष्य भी सदाचारी हों। यह आशा करना सही भी है। हमें सदाचारी बनाया गया था। पाप में गिरने से पहले पुरुष तथा स्त्री सदाचारी ही थे। परमेश्वर से उनकी सीधी बातचीत थी क्योंकि वे भी परमेश्वर की तरह ही पवित्र थे। परन्तु, पाप करने के बाद, वे डरने लगे और उन्हें शर्म आने लगी। उनकी पहले वाली स्थिति अब बिगड़ चुकी थी। यह बात बाबा आदम के ज़माने से ही सत्य मानी जाती रही है।

> ... फिर भी मैं जानता हूं, कि मैं कहीं भी जाता हूं, वहां से ही पृथ्वी से प्रताप चला जाता है।[1]

जो कभी शुद्ध था अब वह कलंकित हो चुका है।

परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की ओर मुड़कर फिर से उसकी पवित्रता में सहभागी बनने के लिए कहा गया था: ''क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं; इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूं'' (लैव्यव्यवस्था 11:44क)। उनके लौटकर उसके पास आने और उसकी सहायता से उनके लिए पवित्र जीवन बिताने की परमेश्वर की इच्छा सदाचार की बाइबल की शिक्षा का आधार है। हमारे सदाचारी होने का आधार परमेश्वर का पवित्र होना है। उसने हमारे जीने के लिए नियम निश्चित कर दिया है।

इसलिए, हमारे जीवनों में एक ''अनिवार्य बात'' होती है। यदि हम चाहते हैं कि वह हमें ग्रहण करे तो हमें उसकी शिक्षाओं के अनुसार अपनी नैतिकता को बनाए रखना आवश्यक है।

हमें कैसा बनना चाहिए और क्या करना चाहिए की ''अनिवार्यता'' हमारे विवेक के आधार पर तय नहीं की जा सकती है। विवेक प्राय: हमें अच्छा काम करने के लिए ही कहता है। परन्तु, हमें अहसास होना चाहिए कि हमारे विवेक हमारे सभी दूसरे परिप्रेक्ष्यों की तरह पाप में डूब चुके हैं। अत: हमारे विवेक त्रुटिपूर्ण हैं। एक तरफ तो, हमें अपने विवेक की बात का उल्लंघन नहीं करना चाहिए; और दूसरी ओर उन्हें अपने अन्तिम अगुवे के रूप में भी नहीं मानना चाहिए। हमारी अगुआई परमेश्वर की आज्ञाओं के द्वारा ही होनी चाहिए जो हमारे मनों तथा विवेकों को उसकी बातें बताती है। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारी नैतिकता स्पष्ट रूप से हमारी काल्पनिक इच्छाओं पर नहीं बल्कि परमेश्वर के वचन की वास्तविकता पर आधारित होगी।

हमारे नैतिक मापदण्ड न्यायसंगत रूप से कहीं और नहीं मिल सकते हैं। उदाहरण के लिए, *शक्ति को हम नैतिकता का आधार नहीं मान सकते।* हम जानते हैं कि राष्ट्रों तथा निजी लोगों में लाठी वाला भैंस नहीं मिल जाती।

हम यह भी जानते हैं कि किसी के लिए *कोई बात केवल इसलिए नैतिक है क्योंकि वह इच्छानुसार लक्ष्य प्राप्त करने के लिए काम करता है।* यदि यह सही होता, तो द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नाजियों द्वारा एक ही जाति के लाखों लोगों की हत्या नैतिक मानी जाती। इस नरसंहार का निर्देश एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दिया गया था। परन्तु यह उद्देश्य नैतिक नहीं था। यदि किसी उद्देश्य को पाने के लिए किसी भी साधन का इस्तेमाल उस उद्देश्य को नैतिक बना देता है, तो संसार भर में गर्भपात से लाखों करोड़ों (प्रत्येक वर्ष 15,00,000 से अधिक) लोगों की हत्या नैतिक होती।[2] क्या यह नैतिक या सदाचार है ?

कोई बात इसलिए भी नैतिक नहीं है कि ''ऐसे ही होता है।'' यदि हम एक ऐसे पापरहित जगत में रह रहे होते जिसमें कोई पाप न होता, तो प्राकृतिक रूप से होने वाली हर बात उचित होती। लोग तो अशुद्ध, पापी हो चुके हैं, इसलिए हमारा स्वाभाविक झुकाव सच्ची नैतिकता का आधार नहीं है। यदि इसे आधार मान लिया जाए, तो चोर-अलार्म, सुरक्षा गार्ड और पूरे देश में लोगों द्वारा अपने घरों में ताला लगाने का क्या औचित्य है या कानून तोड़ने वाले अपराधियों से जेलें क्यों भरी रहती हैं ? हम सब इस बात को समझते हैं कि जिसकी लाठी उसकी भैंस नहीं हो सकती और उपयोगितावाद नैतिकता का आधार नहीं है। पाप में गिरे हुए संसार से वह कार्य क्षेत्र नहीं मिलता जिसमें सच्ची नैतिकता ''स्वाभाविक रूप से आती है।'' इसके लिए हमें कहीं और देखना पड़ेगा।

परमेश्वर का स्वभाव उसकी पवित्रता के द्वारा बड़ी ही श्रेष्ठता से दिखाया जाता है। उसकी पवित्रता हमारे नैतिक जीवन का आधार तथा नेतृत्व करने वाली बन जाती है। पुराने नियम में उसकी बात बहुत स्पष्ट है: ''तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूं'' (लैव्यव्यवस्था 19:2ख)। यह स्वर नये नियम में भी सुनाई देता है। ''जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो'' (1 पतरस 1:15)।

हम परमेश्वर की ओर देखते हैं जिसकी नैतिक सिद्धता हमारी नैतिकता का आधार है। बाइबल में हम उस परमेश्वर से मिलते हैं जो हमें बताता है कि हम सही कैसे बन सकते हैं और कैसे सही काम कर सकते हैं क्योंकि वह स्वयं सही है।

हमें कैसे बनने की ''आवश्यकता'' है? परमेश्वर न केवल हमें *स्पष्ट रूप* से यह बताता है कि हमें कैसा बनना ''चाहिए'' बल्कि हमें यह भी दिखाता है कि हम वैसा कैसे *बन* सकते हैं जैसा हमें होना ''चाहिए।'' परमेश्वर के पुत्र, यीशु ने कहा था, ''क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं'' (यूहन्ना 5:30ख)। अपने पिता की इच्छा पूरी करने में, हम उसमें परमेश्वर की नैतिक श्रेष्ठता को देखते हैं। इसलिए, मसीह के साथ मिलकर, हम अपनी अनैतिकता को एक तरफ रखकर उसके जीवन की शुद्धता को अपने जीवन में दिखाते हैं। विश्वास तथा पश्चात्ताप से बपतिस्मे में ''मसीह को पहनकर'' हम उसमें गाड़े जाते, शुद्ध होते और नये जीवन में चलने के लिए जी उठते हैं (प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3, 4; गलतियों 3:26, 27)। हम अपने विश्वास से उसके अनुग्रह के द्वारा वो बनते हैं जो परमेश्वर हमें बनाना चाहता है (इफिसियों 2:8, 9)।

सच्चाई कार्यान्वित हुई

मसीह में नये जीवन के बहुत से पहलू हैं, परन्तु इस पाठ में हमारी दिलचस्पी नैतिक जीवन के बारे में है। हम सदाचारी कैसे रहें? इसका उत्तर आसान लगता है: प्रतिदिन, हम अनैतिक विचार तथा आचरण से परहेज रखकर नैतिक व्यवहार को अमल में लाएं। नैतिक क्या है और अनैतिक क्या है? पहले हमने कुछ सिद्धांत देखे थे; अब हम उनको स्पष्ट देख सकते हैं। परन्तु ऐसा करते हुए हम इस विषय की उपेक्षा नहीं करेंगे। हम केवल ''सही'' दिशा में संकेत ही करेंगे।

हमारा परमेश्वर सदाचारी है। उसकी पवित्रता सब प्रकार के नैतिक दायित्व का आधार है जो कि आम तौर पर स्पष्ट रूप से व्यक्त की जाती है। नकारात्मक निर्देशों की निम्न स्तुतिमाला पर ध्यान दें: हत्या *न करना,* व्यभिचार *न* करना, चोरी *न* करना, झूठी गवाही *न* देना, अंगच्छेद *न* करना, बलात्कार *न* करना, माता-पिता का अनादर *न* करना या उन्हें कष्ट *न* देना, झूठ *न* बोलना, बेईमानी *न* करना, व्यभिचार जैसे कार्य में लिप्त न होना, निकट सम्बन्धियों से शारीरिक सम्बन्ध *न* रखना, समलैंगिक या विकट बुद्धि के *न* होना।[3] सकारात्मक निर्देशों की निम्न उपासना पर ध्यान दें: दयालु, कोमल, मेल कराने वाले, प्रेम करने वाले, स्पष्ट बात करने वाले, लिहाज़ रखने वाले, बुद्धिमान, पवित्र, धीरज रखने वाले, विनम्र, दीन और आदर करने वाले *बनो।*[4] ये सूचियां अधूरी हैं, परन्तु इनमें हमें सही दिशा में ले जाने का निर्देश है।

हमारा परमेश्वर सदाचारी है। उसने हमें अपने स्वरूप पर बनाया है। वह चाहता है कि हम भी सदाचारी हों। सदाचारी होने का अर्थ उसने स्पष्ट बता दिया है। इस पाठ में हमने सीखा है, (1) पूर्णतया पवित्र परमेश्वर पाने का क्या अर्थ है, (2) उसने पाप में गिर चुके मनुष्यों को हमारी अनैतिकता और अन्य पापों को ढकने के लिए कैसे अवसर दिए हैं और

(3) हमें नैतिक जीवन जीने की चुनौती दी गई है। भजन लिखने वाले ने कहा है,

> मैं याह के बड़े कामों की चर्चा करूंगा;
> निश्चय मैं तेरे प्राचीनकाल वाले अद्‌भुत कामों को स्मरण करूंगा।
> मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूंगा,
> और तेरे बड़े कामों को सोचूंगा।
> हे परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है।
> कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य बड़ा है?
> (भजन संहिता 77:11-13)।

पाद टिप्पणियां

[1]*ओड ऑन द लिमिटेशन्ज़ ऑफ़ इम्मारेलिटी,* 17-18 पंक्तियों में, विलियम वर्डस्वर्थ, ''रीकलेक्शन्ज़ ऑफ़ अरली चाइल्डहुड।'' [2]एफ. लागर्ज स्मिथ, *वेन चॉयस बिकम्स गॉड* (यूजीन, ओरि.: हार्वेस्ट हाउस, 1990), 82-86. [3]निर्गमन 21:15; लैव्यव्यवस्था 18:6-8, 23; 19:11, 29, 35; 20:13; 24:19, 20; व्यवस्थाविवरण 5:17-20; 19:3क; 22:25; 1 कुरिन्थियों 6:18. [4]मत्ती 5:7-9, 22, 28, 31, 39, 42-47; 6:1-4, 22, 23; 7:12, 24-27; 1 कुरिन्थियों 7:10-16; गलतियों 5:14, 22; इफिसियों 5:3-5, 32; 1 पतरस 2:1, 11, 12; 3:16; 4:3, 4; 5:5, 6; 2 पतरस 1:7.